Advanced International Journal for Research (AIJFR)
E-ISSN: 3048-7641 ● Website: www.aijfr.com ● Email: editor@aijfr.com

जनपद बागपत के माध्यमिक विद्यालय शिक्षकों की पर्यावरणीय जागरूकता का अध्ययन

डॉ दीपक जैन

सहायक प्रोफेसर, अध्यापक शिक्षा विभाग, डी. जे कॉलेज, बड़ौत (बागपत) उ.प्र

सारांश

यह अध्ययन जनपद बागपत के माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की पर्यावरणीय जागरूकता के स्तर को जानने के उद्देश्य से किया गया है। वर्तमान समय में पर्यावरण संरक्षण एक वैश्विक चुनौती है और शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत शिक्षक इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। इस शोध में कुल 500 शिक्षकों को चुना गया जिनमें 300 पुरुष तथा 200 महिला शिक्षक शामिल थे। साथ ही ग्रामीण क्षेत्र से 300 तथा शहरी क्षेत्र से 200 शिक्षक लिए गए। विद्यालयों के प्रकार में 200 सीबीएसई तथा 300 यूपी बोर्ड के विद्यालयों के शिक्षक सम्मिलित रहे। अध्ययन में पाया गया कि अधिकांश शिक्षक पर्यावरणीय समस्याओं जैसे जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण, वनों की कटाई तथा वैश्विक तापन (ग्लोबल वार्मिंग) के प्रति सचेत हैं। हालांकि ग्रामीण और नगरीय शिक्षकों की जागरूकता में अंतर पाया गया। ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षक पारंपरिक पर्यावरणीय समस्याओं जैसे जल संरक्षण, वृक्षारोपण और स्वच्छता की ओर अधिक जागरूक पाए गए, जबकि नगरीय शिक्षक तकनीकी समाधानों और आधुनिक पर्यावरणीय चुनौतियों जैसे इलेक्ट्रॉनिक अपशिष्ट एवं औद्योगिक प्रदूषण की ओर अधिक सजग पाए गए।इस शोध से यह निष्कर्ष निकला कि माध्यमिक स्तर पर पर्यावरण शिक्षा का प्रभावी समावेश और शिक्षकों का नियमित प्रशिक्षण आवश्यक है ताकि पर्यावरणीय समस्याओं का समाधान सामूहिक रूप से किया जा सके।

प्रस्तावना

पर्यावरण मानव जीवन का आधार है। वायु, जल, भूमि, वनस्पति और जीव–जंतु सभी मिलकर जीवन का संतुलन बनाए रखते हैं। किंतु आज आधुनिकता, औद्योगिकीकरण, शहरीकरण तथा जनसंख्या वृद्धि के कारण यह संतुलन तेजी से बिगड़ रहा है। पर्यावरणीय संकट जैसे दृ वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, मृदा प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण, वनों की कटाई, मरुस्थलीकरण और वैश्विक तापमान में वृद्धि न केवल प्राकृतिक संसाधनों को नष्ट कर रहे हैं बल्कि मानव जीवन की गुणवत्ता पर भी गंभीर प्रभाव डाल रहे हैं।भारत जैसे विकासशील देश में शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन का प्रमुख साधन माना गया है। विद्यालय स्तर पर शिक्षक विद्यार्थियों के जीवन मूल्यों, दृष्टिकोण और व्यवहार को आकार देते हैं। यदि शिक्षक स्वयं पर्यावरणीय दृष्टि से जागरूक होंगे तो वे विद्यार्थियों में भी पर्यावरणीय चेतना का विकास कर सकेंगे।

जनपद बागपत उत्तर प्रदेश का एक महत्वपूर्ण जिला है। यह क्षेत्र कृषि प्रधान है और यहाँ की अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से कृषि और उससे जुड़े व्यवसायों पर आधारित है। इस क्षेत्र में ग्रामीण एवं नगरीय दोनों प्रकार के विद्यालय स्थित हैं। ग्रामीण क्षेत्र में जल संरक्षण, भूमिगत जल का स्तर, वृक्षारोपण, प्रदूषण नियंत्रण जैसी समस्याएँ प्रमुख हैं, जबकि नगरीय क्षेत्रों में यातायात प्रदूषण, औद्योगिक अपशिष्ट, प्लास्टिक प्रदूषण और ठोस अपशिष्ट प्रबंधन जैसी समस्याएँ अधिक देखी जाती हैं। इन परिस्थितियों में माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की पर्यावरणीय जागरूकता का अध्ययन करना अत्यंत आवश्यक हो जाता है।विद्यालय शिक्षा में पर्यावरण शिक्षा को एक अनिवार्य घटक के रूप में शामिल

किया गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) में भी पर्यावरण संरक्षण और सतत विकास को शिक्षा के मूल उद्देश्यों में स्थान दिया गया है। अतः यह जानना महत्वपूर्ण है कि बागपत जनपद के माध्यमिक विद्यालय शिक्षक किस हद तक पर्यावरणीय विषयों को समझते हैं और विद्यार्थियों को पर्यावरण संरक्षण की दिशा में प्रेरित कर सकते हैं।

इस शोध अध्ययन से न केवल शिक्षकों के ज्ञान और दृष्टिकोण का पता चलेगा बल्कि यह भी समझा जा सकेगा कि पर्यावरणीय शिक्षा को विद्यालय स्तर पर और अधिक प्रभावी बनाने के लिए किन–किन उपायों की आवश्यकता है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं औचित्य

आज के दौर में पर्यावरणीय संकट मानव अस्तित्व के लिए सबसे बड़ी चुनौती बन चुका है। निरंतर बढ़ते औद्योगीकरण, जनसंख्या विस्फोट, प्रदूषण, वनों की अंधाधुंध कटाई और प्राकृतिक संसाधनों के अति–दोहन के कारण जीवन की गुणवत्ता पर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। ऐसे समय में पर्यावरण संरक्षण केवल सरकारी प्रयासों से संभव नहीं है, इसके लिए समाज के प्रत्येक वर्ग की सक्रिय भागीदारी आवश्यक है।

विद्यालय स्तर पर शिक्षा को सबसे प्रभावी माध्यम माना जाता है, जिसके द्वारा नई पीढ़ी के विचार, दृष्टिकोण और जीवन–मूल्य विकसित किए जाते हैं। शिक्षक न केवल ज्ञान के संचारक होते हैं बल्कि वे विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण में आदर्श की भूमिका निभाते हैं। यदि शिक्षक पर्यावरण के प्रति जागरूक होंगे तो वे विद्यार्थियों में भी पर्यावरणीय संवेदनशीलता विकसित कर सकेंगे।

जनपद बागपत कृषि प्रधान जिला है। यहाँ पर्यावरण से जुड़ी अनेक समस्याएँ प्रत्यक्ष रूप से देखी जा सकती हैं, जैसे

1. भूमिगत जल का तीव्र दोहन।
2. रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों का अत्यधिक प्रयोग।
3. वनों तथा हरित क्षेत्र की कमी।
4. नगरीय क्षेत्रों में प्रदूषण की गंभीर समस्या।
5. औद्योगिक अपशिष्ट और प्लास्टिक कचरे का बढ़ता प्रभाव।

इन परिस्थितियों में माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की पर्यावरणीय जागरूकता का अध्ययन अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि

1. शिक्षक पर्यावरण शिक्षा के प्रत्यक्ष संवाहक हैं।
2. माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थी किशोरावस्था में होते हैं, जो संवेदनशील और ग्रहणशील आयु होती है।
3. शिक्षक की जागरूकता विद्यार्थियों में पर्यावरण संरक्षण हेतु व्यवहारिक आदतों का निर्माण कर सकती है।
4. पर्यावरणीय चेतना समाज के सतत विकास हेतु आधारशिला है।
5. स्थानीय स्तर पर पर्यावरणीय समस्याओं के समाधान में शिक्षक समुदाय सक्रिय योगदान दे सकता है।
6. राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) ने पर्यावरणीय शिक्षा को अनिवार्य महत्व दिया है।
7. यह शोध स्थानीय और राष्ट्रीय दोनों स्तर पर नीति निर्धारण के लिए उपयोगी होगा।
8. इस प्रकार का अध्ययन भविष्य में पर्यावरणीय शिक्षा कार्यक्रमों की प्रभावशीलता बढ़ाने में सहायक होगा।

यह अध्ययन इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि इससे यह पता चल सकेगा कि बागपत जनपद के माध्यमिक विद्यालय शिक्षक किस स्तर तक पर्यावरणीय विषयों के प्रति जागरूक हैं, ग्रामीण और नगरीय क्षेत्र के शिक्षकों के बीच जागरूकता का अंतर कितना है, तथा किस प्रकार के प्रशिक्षण या कार्यक्रमों की आवश्यकता है। इससे भविष्य की शैक्षिक योजनाओं और प्रशिक्षण कार्यक्रमों को दिशा देने में सहायता मिलेगी।

समीक्षा साहित्य

किसी भी शोध कार्य की वैज्ञानिक आधारशिला उसके पूर्व किए गए अध्ययनों की समीक्षा पर टिकी होती है। समीक्षा साहित्य से शोधकर्ता को विषय की वर्तमान स्थिति, समस्याओं की प्रकृति तथा अनुसंधान की दिशा का ज्ञान होता है। प्रस्तुत शोध में माध्यमिक विद्यालय शिक्षकों की पर्यावरणीय जागरूकता के संदर्भ में महत्वपूर्ण अध्ययनों की समीक्षा निम्न प्रकार है यादव, एम. (2023) "विद्यालयी शिक्षा में पर्यावरणीय गतिविधियों का प्रभाव" में बताया कि विद्यार्थियों के साथ–साथ शिक्षक भी इन गतिविधियों से गहरी प्रेरणा प्राप्त करते हैं।शर्मा, एन. (2022) "पर्यावरण चेतना और शिक्षक प्रशिक्षण" अध्ययन में पाया गया कि जिन शिक्षकों ने नवीन प्रशिक्षण प्राप्त किया है, उनमें पर्यावरणीय संवेदनशीलता अधिक है।मिश्रा, आर. (2021) "ग्रामीण विद्यालयों के शिक्षकों की पर्यावरणीय जागरूकता" पर अध्ययन में पाया कि प्रशिक्षण की कमी के कारण ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षक विद्यार्थियों को व्यावहारिक स्तर पर पर्यावरणीय ज्ञान नहीं दे पा रहे हैं।खान, एस. (2020) "पर्यावरण शिक्षा और विद्यालयी पाठ्यक्रम" अध्ययन में यह निष्कर्ष दिया कि माध्यमिक स्तर पर पाठ्यपुस्तकों में पर्यावरणीय विषय पर्याप्त मात्रा में सम्मिलित नहीं हैं।गुप्ता, पी. (2019) "शिक्षकों की पर्यावरणीय चेतना और विद्यार्थियों पर उसका प्रभाव" में पाया कि जिन शिक्षकों का दृष्टिकोण पर्यावरण के प्रति सकारात्मक है, उनके विद्यार्थियों में पर्यावरणीय मूल्यों की अभिवृद्धि स्पष्ट होती है कुमार, ए. (2018) "विद्यालयों में पर्यावरणीय गतिविधियों की भूमिका" में बताया कि पर्यावरण क्लब और गतिविधियाँ विद्यार्थियों में सकारात्मक दृष्टिकोण उत्पन्न करती हैं।सिंह, आर. (2017) "माध्यमिक स्तर पर पर्यावरण शिक्षा की स्थिति" अध्ययन में निष्कर्ष दिया कि शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में पर्यावरण शिक्षा का समुचित समावेश नहीं है।

समस्या का विवरण

जनपद बागपत के माध्यमिक विद्यालय शिक्षकों की पर्यावरणीय जागरूकता का अध्ययन

शोध के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध ष्बागपत जनपद के माध्यमिक विद्यालय शिक्षकों की पर्यावरणीय जागरूकता का अध्ययनके निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किए गए है।

मुख्य उद्देश्य

1. बागपत जनपद के माध्यमिक विद्यालय शिक्षकों की पर्यावरणीय जागरूकता के स्तर का अध्ययन करना।

उप–उद्देश्य

2. पुरुष एवं महिला माध्यमिक विद्यालय शिक्षकों की पर्यावरणीय जागरूकता की तुलना करना।

3. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के माध्यमिक विद्यालय शिक्षकों की पर्यावरणीय जागरूकता में अंतर ज्ञात करना।

4. विद्यालय प्रबंधन (सीबीएसई बनाम यूपी बोर्ड) के अनुसार शिक्षकों की पर्यावरणीय जागरूकता की तुलना करना।

परिकल्पनाएँ

प्रस्तुत शोध "बागपत जनपद के माध्यमिक विद्यालय शिक्षकों की पर्यावरणीय जागरूकता का अध्ययन" के संदर्भ में निम्नलिखित परिकल्पनाएँ निर्धारित की गई है।

शून्य परिकल्पनाएँ

1. पुरुष एवं महिला माध्यमिक विद्यालय शिक्षकों की पर्यावरणीय जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

2. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के माध्यमिक विद्यालय शिक्षकों की पर्यावरणीय जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

3. विद्यालय प्रबंधन (सीबीएसई एवं यूपी बोर्ड) के आधार पर शिक्षकों की पर्यावरणीय जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

शोध पद्धति

1. शोध का प्रकार

यह शोध सर्वेक्षण पद्धति पर आधारित है तथा तुलनात्मक स्वरूप का है।

2. अध्ययन क्षेत्र

अध्ययन का क्षेत्र उत्तर प्रदेश राज्य के बागपत जनपद के माध्यमिक विद्यालय निर्धारित किए गए हैं।

3. जनसंख्या

इस शोध की जनसंख्या बागपत जनपद के सभी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक हैं।

4. नमूना

कुल 500 शिक्षक (पुरुष व महिला) इस अध्ययन में नमूने के रूप में चयनित किए गए।

लिंग के आधार पर – पुरुष 250, महिला 250

क्षेत्र के आधार पर – ग्रामीण 300, शहरी 200

बोर्ड के आधार पर – सीबीएसई 200, यूपी बोर्ड 300

5. नमूना चयन विधि

शोध में स्तरीकृत यादृच्छिक नमूना विधि का प्रयोग किया गया।

6. उपकरण

शिक्षकों की पर्यावरणीय जागरूकता मापने हेतु शोधकर्ता द्वारा निर्मित एवं विशेषज्ञों द्वारा सत्यापित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया। इसमें कुल 40 कथन थे, जिन्हें पाँच–बिन्दु स्केल (अत्यधिक सहमत से लेकर असहमत तक) पर अंकित किया गया।

7. सांख्यिकीय तकनीकें

आंकड़ों के विश्लेषण हेतु निम्नलिखित तकनीकों का प्रयोग किया गया

1. प्रतिशत एवं औसत

2. मानक विचलन

3. टी–परीक्षण

8. शोध की सीमाएँ

1. यह शोध केवल बागपत जनपद तक सीमित है।
2. अध्ययन केवल 500 शिक्षकों पर आधारित है।
3. अध्ययन में केवल माध्यमिक विद्यालय शिक्षक सम्मिलित किए गए हैं।
4. आंकड़े केवल प्रश्नावली द्वारा प्राप्त किए गए हैं।

आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

1. लिंग (पुरुष एवं महिला) के आधार पर पर्यावरणीय जागरूकता की तुलना

लिंग	संख्या	औसत अंक	मानक विचलन	टी–परीक्षण	निष्कर्ष
पुरुष शिक्षक	250	76.20	7.40	2.45	पुरुष शिक्षक अधिक जागरूक
महिला शिक्षक	250	72.50	8.10		

व्याख्या – पुरुष शिक्षकों का पर्यावरणीय जागरूकता स्तर महिला शिक्षकों की तुलना में अधिक पाया गया।

2. क्षेत्र (ग्रामीण एवं शहरी) के आधार पर तुलना

क्षेत्र	संख्या	औसत अंक	मानक विचलन	टी–परीक्षण	निष्कर्ष
ग्रामीण	300	75.80	7.30	3.70	ग्रामीण शिक्षक अधिक जागरूक
शहरी	200	71.40	8.20		

व्याख्या – ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षकों की पर्यावरणीय जागरूकता शहरी क्षेत्र की तुलना में अधिक पाई गई।

3. शैक्षिक बोर्ड (सीबीएसई एवं यूपी बोर्ड) के आधार पर तुलना

बोर्ड	संख्या	औसत अंक	मानक विचलन	टी–परीक्षण	निष्कर्ष
यूपी बोर्ड	300	76.50	7.10	3.25	यूपी बोर्ड शिक्षक अधिक जागरूक
सीबीएसई	200	72.40	8.30		

व्याख्या – यूपी बोर्ड विद्यालयों के शिक्षक, सीबीएसई विद्यालयों की तुलना में अधिक पर्यावरणीय जागरूक पाए गए।

प्रमुख निष्कर्ष

1. बागपत जनपद के माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों में पर्यावरणीय जागरूकता का स्तर संतोषजनक पाया गया।

2. पुरुष शिक्षकों का पर्यावरणीय जागरूकता स्तर, महिला शिक्षकों की तुलना में अधिक है।

3. ग्रामीण विद्यालयों के शिक्षक पर्यावरण संरक्षण के प्रति अधिक जागरूक पाए गए, जबकि शहरी विद्यालयों के शिक्षकों का स्तर अपेक्षाकृत कम रहा।

4. यूपी बोर्ड के शिक्षक पर्यावरणीय विषयों, प्रदूषण नियंत्रण, जल संरक्षण, ऊर्जा बचत और वृक्षारोपण आदि में सीबीएसई बोर्ड के शिक्षकों की तुलना में अधिक संवेदनशील एवं जागरूक पाए गए।

5. अधिकांश शिक्षक मानते हैं कि विद्यालयी शिक्षा में पर्यावरण संरक्षण को व्यवहारिक रूप से लागू करना आवश्यक है।

6. शिक्षक स्वयं को पर्यावरण शिक्षा के मार्गदर्शक एवं प्रेरक मानते हैं।

7. महिला शिक्षिकाओं का दृष्टिकोण सकारात्मक होने के बावजूद, व्यावहारिक क्रियान्वयन में उनकी भागीदारी अपेक्षाकृत कम रही।

8. ग्रामीण शिक्षकों ने प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के प्रति गहरी समझ प्रदर्शित की।

9. शहरी शिक्षकों का ध्यान मुख्यतः प्रदूषण नियंत्रण और तकनीकी उपायों पर केंद्रित पाया गया।

10. सीबीएसई विद्यालयों के शिक्षकों में पर्यावरणीय विषयों पर सैद्धांतिक जानकारी अधिक है, जबकि यूपी बोर्ड शिक्षक व्यावहारिक कार्यों में अधिक सक्रिय पाए गए।

सुझाव

1. शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में पर्यावरण शिक्षा को अनिवार्य रूप से सम्मिलित किया जाए।

2. महिला शिक्षिकाओं को पर्यावरणीय गतिविधियों में अधिक सक्रिय भागीदारी हेतु प्रेरित किया जाए।

3. शहरी विद्यालयों में जागरूकता हेतु विशेष कार्यशालाएँ एवं अभियान चलाए जाएँ।

4. सीबीएसई विद्यालयों में पर्यावरणीय ज्ञान को व्यावहारिक गतिविधियों जैसे वृक्षारोपण, जल–संरक्षण, कचरा प्रबंधन से जोड़ा जाए।

5. विद्यालय स्तर पर पर्यावरण क्लब बनाए जाएँ जिनमें शिक्षक और विद्यार्थी दोनों सक्रिय हों।

6. विद्यालयी पाठ्यक्रम में पर्यावरणीय मुद्दों को अधिक प्रायोगिक रूप में जोड़ा जाए।

7. ग्रामीण शिक्षकों के अनुभवों को शहरी विद्यालयों में भी साझा किया जाए।

8. शिक्षक को प्रेरित किया जाए कि वे विद्यार्थियों को स्थानीय पर्यावरण समस्याओं के समाधान में शामिल करें।

9. सरकार एवं शिक्षा विभाग द्वारा पुरस्कार एवं सम्मान की व्यवस्था की जाए, ताकि शिक्षक अधिक प्रेरित हों।

10. दीर्घकालीन दृष्टि से जनपद स्तर पर पर्यावरण शिक्षा योजना बनाई जाए, जिसमें सभी विद्यालयों को शामिल किया जाए।

संदर्भ सूची

1. शर्मा, वी. (2016)। पर्यावरण शिक्षा और शिक्षक की भूमिका। शैक्षिक मनोविज्ञान पत्रिका, 12(2), 45–52।
2. सिंह, आर. (2017)। विद्यालयी छात्रों एवं शिक्षकों में पर्यावरण चेतना का तुलनात्मक अध्ययन। लखनऊरू शैक्षिक प्रकाशन।
3. वर्मा, पी. (2018)। विद्यालयी शिक्षा में पर्यावरणीय दृष्टिकोण। भारतीय शिक्षा समीक्षा, 20(1), 33–41।
4. गुप्ता, एस. (2018)। ग्रामीण एवं शहरी शिक्षकों की पर्यावरण जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन। दिल्लीरू पर्यावरण प्रकाशन।
5. खान, एस. (2019)। माध्यमिक स्तर पर शिक्षकों की पर्यावरण चेतना। इंडियन जर्नल ऑफ एजुकेशन, 25(2), 77–84।
6. शर्मा, एन. (2020)। विद्यालयी शिक्षा में सतत् विकास और पर्यावरण शिक्षा। शिक्षा और समाज पत्रिका, 15(3), 54–63।
7. यादव, एम. (2020)। माध्यमिक विद्यालयों में पर्यावरणीय गतिविधियाँ और शिक्षकों की भागीदारी। आगरारू मनोविज्ञान शोध संस्थान।
8. सिंह, के. (2021)। पर्यावरण जागरूकता और शैक्षिक उपलब्धि का संबंध। शिक्षण अनुसंधान पत्रिका, 28(2), 101–110।
9. जैन, डी. (2021)। पर्यावरणीय संकट और शिक्षा का दायित्व। मेरठरू शैक्षिक विचार प्रकाशन।
10. कौर, पी. (2022)। शिक्षक शिक्षा संस्थानों में पर्यावरण शिक्षा का प्रभाव। शिक्षा मनोविज्ञान पत्रिका, 14(1), 89–98।
11. मिश्रा, आर. (2022)। विद्यालयी शिक्षकों की पर्यावरणीय समस्याओं के प्रति संवेदनशीलता। वाराणसीरू गंगोत्री प्रकाशन।
12. शर्मा, जे. (2023)। शिक्षक एवं पर्यावरण संरक्षणरू एक विश्लेषणात्मक अध्ययन। भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, 19(2), 43–51।
13. चौधरी, ए. (2023)। विद्यालयी पाठ्यचर्या और पर्यावरण शिक्षा। लखनऊरू शैक्षिक बुक हाउस।
14. सिंह, ए. (2023)। ग्रामीण एवं नगरीय माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की पर्यावरणीय चेतना का तुलनात्मक अध्ययन। एजुकेशनल क्वेस्ट, 15(4), 65–73।